समूह सत्र नं0– 6

परिवार में महिलाओं और पुरूषों की भूमिकाएं

उद्देश्य :–

- समूह के सदस्य लड़कियों/महिलाओं व लड़कों/पुरूषों की भूमिकाओं की पहचान कर इसका उनके ऊपर पड़ने वाले असर को समझ पायेगें।
- समूह सदस्य गैरबराबरी को दूर करने के लिए अपनी भूमिकाओं में बदलाव पर समझ बना पायेगें व पहल कर पायेगें।

पद्धति : सामूहिक चर्चा

समय : 1 घंटा

सामग्री : चार्ट व मार्कर

चरण :–

1. परिवार में लड़कों/पुरूषों तथा लड़कियों/महिलाओं की क्या भूमिका है? प्रतिभागियों से निकलने वाले जवाबों को निम्न टेबिल के अनुसार चार्ट पर लिखते जाये।

नोट– अगर पुरूषों के साथ यह अभ्यास कर रहे हैं तो पुरूषों और महिलाओं के कॉलम में और यदि लडकों के साथ कर रहे हैं तो लड़कों और लड़कियों के कॉलम में ही लिखें तथा उसी संदर्भ में बात करें।

2. वर्तमान भूमिकाओं का लड़कों/पुरूषों व लड़कियों/महिलाओं पर क्या असर पड़ता हैं? असर सकारात्मक या नकारात्मक दोनों तरीकों से हो सकता है इसलिए निकलने वाले जवाबों को टेबल में लिखते जाये।

लड़कों – भूमिकाएं	पुरूषों– भूमिकाएं	लड़कियों– भूमिकाएं	महिलाओं– भूमिकाएं
अच्छी पढाई अच्छी नौकरी तेज/समझदार मिलनसार बहनों की रक्षा करना पिता के कामों में हाथ बंटाये	परिवार का मुखिया अच्छा पैसा कमाना अनुशासन बनाये रखना परिवार की रक्षा परिवार चलाना सही निर्णय ले सार्वजनिक कामों में भाग लें	कम बोलना सभी का कहना मानना घर का सब काम आता हो परिवार की इज्जत मॉ के कामों में हाथ बंटाये	अच्छी गृहणी पति की सेवा/ख्याल रखना बच्चों की अच्छी परवरिश वृद्धों की देखभाल/सेवा जानवरों की देखभाल
असर	**असर**	**असर**	**असर**
असफलता के डर से आत्महत्या अच्छा पैसा कमाने के दबाव में गलत	जरूरतो को पूरा करने के दबाव में जोखिम व आत्म–हत्या जैसे कदम उठाना श्रेष्ठता साबित करने का	पढ़ाई व काम के अवसरो से वंचित कम उम्र में शादी	पति व बच्चों पर निर्भरता तथा हिंसा सहने के लिए विवश होना काम बोझ से बीमार

रास्ते चुनना श्रेष्ठता साबित करने के दबाव में हिंसक होना	दबाव अनुशासन बनाये रखने के नाम पर हिंसक व्यवहार पत्नी का सहयोग न मिल पाना	दूसरो पर निर्भरता हीनभावना/कुंठा कई तरह के प्रतिबंध घर से भाग जाना	रहना परिवार में इज्जत न मिलना अपने शरीर पर नियत्रंण न होना

3. यदि वर्तमान भूमिकाओं को बदल दिया जाय तो क्या लड़कें/पुरूष व लड़कियां/महिलाएं उन भूमिकाओं को पूरा कर पायेगी? अगर नहीं तो क्यों?
4. उक्त भूमिकाओं को कौन तय करता है? क्या ये तय की गई भूमिकाएं ठीक हैं?
5. गैरबराबरी को दूर करने के लिए लड़कों/पुरूषों को अपनी भूमिकाओं में क्या बदलाव लाने की जरूरत है?

सार : परिवार में लड़का/पुरूष या लड़की/महिला होने के नाते अलग–अलग तरह की भूमिकाएं तय की गई हैं जो भेदभावपूर्ण मान्यताओं पर आधारित हैं। इन भूमिकाओं को पुरूष प्रधान समाज द्वारा तय किया गया है तथा परिवार में पुरूषों को इन्हें पूरा करने की अपेक्षा की जाती है। इन तय की गई भूमिकाओं के आधार पर पुरूषों को सम्पत्ति, इज्जत तथा आगे बढ़ने के लिए कई तरह के अवसर मिल जाते हैं तथा महिलाएं उन अवसरो से वंचित रह जाती हैं लेकिन परिवार में इन्ही अपेक्षित भूमिकाओं की वजह से बहुत बार पुरूषों को कई तरह के डर, तनाव व जोखिम उठाना पड़ता है। मसलन पुरूषों पर अच्छी नौकरी व पैसा कमाने का दबाव, किसी भी स्थिति में परिवार के सदस्यों की रक्षा करने का दबाव, मर्द दिखने का दबाव, महिलाओं के लिए तय भूमिकाओं से दूर रहने का दबाव आदि।

जब पुरूष इन अपेक्षाओं को पूरा कर पाने में असमर्थ होते हैं या इन भूमिकाओं में बदलाव लाने की कोशिश करते हैं तो उन्हें कई तरह के ताने दिये जाते हैं, उनकी मर्दानगी पर सवाल उठाये जाते हैं, धर्म व संस्कृति की रक्षा की बात की जाती है जिससे वे कई बार हिंसक व गैरकानूनी रास्ते पर भी चले जाते हैं या आत्महत्या जैसा कदम भी उठाने के लिए विवश हो जाते हैं।

आज महिलाएं पारिवारिक भूमिकाओं के साथ साथ पुरूषों के लिए मानी जाने वाली भूमिकाओं को पूरा कर रही हैं जिससे उनके ऊपर काम का बोझ बढ़ा है। अगर हम बराबरी युक्त तथा भेदभाव मुक्त परिवार बनाना चाहते हैं जो हर इन्सान का अधिकार है तो पुरूषों को घर के अंदर भी अपनी भूमिकाओं को बढ़ाना होगा, अपने रिश्तो को नये तरीकों से परिभाषित करना होगा ताकि बेहतर समाज को बनाया जा सके।

नोट : सत्र समापन के पूर्व समूह सदस्यों की प्रतिक्रियाएं जरूर लें तथा उनके द्वारा व्यक्त किये जाने वाले विचारों को नोट कर लें तथा जरूरत के आधार पर ही स्पष्टीकरण दें।

इसके बाद उपस्थित सभी प्रतिभागियों को धन्यवाद देते हुए सत्र का समापन करें।